Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, NOV-DEC, 2018, VOL- 6/48

परिवार के स्वरूप का वर्तमान परिदृश्य— एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

Arun Kumar, Ph. D.

Assistant professor and Head, Department of Sociology, LSSSS Government P G College Maant, Mathura

Abstract

आधुनिकीकरण तथा विकास की दौड़ में व्यक्ति इतना व्यस्त है कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए वह सब कर रहा है, जो गलत है। आधुनिक मानव सिर्फ अपने लिए जीता है दूसरों के लिए नहीं लोग पश्चिमी सभ्यता को ग्रहण कर रहे है। हिन्दू संस्कृति जिसका विदेशी लोग लोहा मानते है और उसका अनुकरण कर रहे है। लेकिन हिन्दू भ्रमित है वह विदेशी सभ्यता को अपना रहा है जिसके परिणाम स्वरूप बुजुर्गों के सम्मान में (प्रभाव) अत्यन्त कमी आई है। संस्कृति से लोग वंचित हो रहे है। कम कपड़े पहनना, अंग प्रदर्शन करना, अन्तर्जातीय विवाह, विधवा पुर्नविवाह, प्रेम विवाह और विलम्ब विवाह लोग अपनी शान समझते है जो कि भारतीय संस्कृति के बिल्कुल विपरीत है। उत्तरदाता अपने बहुत अधिक प्रतिशत में इस बात से सहमत है कि आजकल के परिवारों में नशाखोरी बढ़ रही है। यद्यपि कि आजकल धार्मिक अनुष्ठान के पक्ष में सभी आयु वर्ग, जाति, शिक्षा, आय तथा मूल रूप से ग्रामीण तथा शहरी उत्तरदाता इस पक्ष में है कि धार्मिक अनुष्ठान दिखावा मात्र रह गया है। परिवार के मुखिया के प्रभाव में आई कमी के कारण लोग अपनी संस्कृति को खोते जा रहे हैं। यद्यपि कि अधिकांश उत्तरदाता सभी आयु, जाति, शिक्षा तथा आयु रूप से ग्रामीण तथा शहरी अपने अधिकांश प्रतिशत में अर्न्तजातीय विवाह का कारण स्त्रियों का अधिक शिक्षित होना मानते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली: *परिवार, स्वरूप, परिदृश्य, विघटन।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध प्ररचना : प्रस्तुतश्शोध अध्ययन को सम्पादित करने के लिए पूर्णत: द्वितीयक तथ्यों पर आधारित वर्णनात्मक शोध प्ररचना को चुना गया है, जिसमें ऐतिहासिक अध्ययन पध्दति को भी समावेशित किया गया है, ताकि अध्ययन की प्रस्तुति सरल किन्तु तार्किक रूप में की जा सके। अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग प्रमुख अध्ययन पद्धति के रूप में किया गया है इसके मुख्यत: दो कारण है— प्रथम तो साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से परिवार का बदलता हुआ स्वरूप के बारे में पारस्परिक विचार विमर्श से वास्तविक गहन सूचनायें प्राप्त हो जाती हैं। द्वितीय यह कि साक्षात्कार अनुसूची ही एक मात्र ऐसी अध्ययन पद्धति है जिसमें कि अवलोकन पद्धति का भी आंशिक लाभ मिल जाता है क्योंकि यदि कोई सूचनादाता तथ्यों को छिपाने की कोशिश करता है तो अनुसंधानकर्ता घटना स्थल पर मौजूद होने के कारण वास्तविक सूचना से अवगत हो जाता है।

विवेचना: परिवार मनुष्यों का वह समूह है जिसमें—

१. स्त्री—पुरूष का यौन सम्बन्ध समाज द्वारा विधिपूर्वक स्वीकार किया जाता है।

२. यौन सम्बन्ध स्थिर बना दिया जाता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

३. स्त्री—पुरूष किसी स्थान पर साथ—साथ रहते हैं एवं

४. सन्तान की उत्पत्ति जिनके द्वारा होती है ।

५. उन पर उनके पालन—पोषण की जिम्मेदारी भी होती है ।

परिवार की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्त :

परिवार प्रत्येक समाज में पाया जाता है। वास्तव में परिवार की उत्पत्ति कैसे हुई, इस सम्बन्ध में मानव शास्त्रियों, समाजशास्त्रियों व अन्य विद्वानों में अभी तक कोई मतैक्य स्थापित नहीं हुआ है। परिवार की उत्पत्ति विवादास्पद है। इस सम्बन्ध में विभिन्न सिद्धान्त प्रतिपादित किये जाते रहे है। इनमें से प्रमुख निम्न प्रकार है।

पितृसत्तात्मक सिद्धान्त : यह सिद्धान्त परिवार की उत्पत्ति का प्राचीन सिद्धान्त है। प्लेटो और अरस्तू को इस सिद्धान्त का प्रमुख प्रतिपादक माना जाता है इनके अनुसार परिवार का प्रारम्भिक स्वरूप पितृसत्तात्मक था। आधुनिक काल में सन् १८६१ में हेनरी मैन ने अपनी पुस्तक ।दबपमदज स्ूं में इस सिद्धान्त का समर्थन किया है।इन विद्वानों का कहना है कि यदि हम पशु और पक्षी जगत का अवलोकन करें तो हमें यह देखने को मिलता है कि नर मादा के ऊपर अपना अधिकार रखने का प्रयत्न करता है। यही विचार परिवार की उत्पत्ति में मूल रूप से निहित था। पिता का परिवार में सर्वोच्च स्थान है। परिवार की सारी व्यवस्था वही संचालित करता है वंश उसी के नाम पर चलता है।

आलोचना— इस सिद्धान्त का महत्व १८वीं शताब्दी के अन्त तक बना रहा किन्तु आगे चलकर विद्वानों ने इसे अमान्य ठहरा दिया। यह सिद्धान्त वास्तव में सैद्धान्तिक तथ्यों पर आधारित है। आधुनिक अनुसंधान से इस सिद्धान्त की पुष्टि नहीं हो सकी है विश्व के समाजों के अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि सब जगह पितृसत्तात्मक परिवार नहीं है।

यौन साम्यवाद का सिद्धान्त : कुछ समाजशास्त्रियों का विचार है कि प्रारम्भिक अवस्था में स्त्री—पुरूषों को स्वच्छन्द रखने की स्वतंत्रता थी। लुईस मार्गन तथा फ्रेजर के अनुसार प्रारम्भ में परिवार नहीं होते थे। सभी स्त्री—पुरूष यौन सम्बन्ध के लिये स्वतंत्र थे। लिंग साम्यवाद की इस स्थिति के कष्टों और लड़ाई झगड़ों के निवारण हेतु लिंग सम्बन्धों पर नियंत्रण कर मानव ने परिवार और विवाह की उत्पत्ति की। सिद्धान्त के प्रमाण में वे कुछ जंगली जातियों में प्रचलित रीति—रिवाजों जैसे उत्सवों पर लिंग स्वच्छन्दता स्त्रियों का आदान—प्रदान अतिथि सत्कार में पत्नी को अतिथि को मैथुन के लिये भेंट करना आदि तथ्य प्रस्तुत करते हैं।

आलोचना— वेस्टरमार्क ने यह स्पष्ट किया है कि पुरूष ईर्ष्यालु होता है वह नहीं चाहता कि दूसरे व्यक्तियों का उसकी पत्नी पर प्रभाव पड़े। इस आधार पर यौन साम्यवाद का सिद्धान्त स्वीकार्य नहीं है।

मातृसत्तात्मक सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं रावर्ट ब्रिफाल्ट वेकोफन तथा टायलर। ब्रिफाल्ट ने अपनी पुस्तक 'दि मादर्स' में यह स्पष्ट किया है कि प्रारम्भ में परिवार की उत्पत्ति माता की निरन्तर आवश्यकताओं और उनकी बच्चों की आवश्यकताओं के कारण हुई और जब मनुष्य अपनी शैशवावस्था में पशुवत् स्थिति में था और उनमें यौन साम्यवाद था। ऐसी स्थिति में सन्तानों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने का एकमात्र स्त्रोत माँ थी।

आलोचना— यद्यपि परिवार में माता की स्थिति को अस्वीकार नहीं किया जा सकता किन्तु यह परिवार की उत्पत्ति का एक मात्र सिद्धान्त नहीं है। पारिवारिक संगठन में ही नहीं सम्पूर्ण सामाजिक संगठन में स्त्री की अपेक्षा पुरूष का विशेष हाथ रहा है।

एक विवाह का सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के प्रतिपादन वेस्टनमार्क ने किया था। इनके अनुसार परिवार का प्रारम्भिक स्वरूप एक विवाही था। डार्विन के सिद्धान्त का समर्थन करते हुये उन्होंने कहा है कि परिवार का जन्म पुरूष के आधिपत्य और ईर्ष्या के कारण हुआ है। वेस्टनमार्क ने अपने कथन की पुष्टि में कुछ बन्दरों में पाये जाने वाले एक विवाह की प्रथा को प्रस्तुत किया है। मैलिनो वस्की ने लिखा है एक विवाह ही विवाह का सच्चा स्वरूप है, रहा है तथा रहेगा।

आलोचना— एक विवाही परिवार का सिद्धान्त तर्कपूर्ण होते हुये भी भ्रमपूर्ण है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि बहुपति और बहुपत्नी विवाह होते रहे हैं। हम केवल एक सिद्धान्त को ही परिवार की उत्पत्ति का मुख्य सिद्धान्त नहीं मान सकते।

उद्विकासीय सिद्धान्त : उद्विकासीय सिद्धान्त का परिवार की उत्पत्ति को स्पष्ट करने में विशेश महत्वपूर्ण स्थान है। यह सिद्धान्त सर्वप्रथम वेकोफन ने प्रस्तुत किया जिसे वाद में स्पेन्सर, टाइलर, मैकलेनन, लुबोक आदि ने भी इसका समर्थन किया। वेकोफन ने परिवार की उत्पत्ति को एक विकासवादी क्रम द्वारा स्पष्ट किया जो इस प्रकार है—

१. कामाचार— प्रथम स्तर में परिवार लिंग साम्यवाद पर आधारित थे। यौन सम्बन्धी नियंत्रण का अभाव था। बच्चों का विशेष सम्बन्ध माँ से होता था।
२. बहुपति विवाह— प्रथम स्तर में यौन सम्बन्धों में स्वतंत्रता रही जिसके परिणामस्वरूप आदिम समाज को दरिद्रता ने घेर लिया। अत: पुरूषों ने लड़कियों को पैदा होते ही मारना आरम्भ कर दिया। जिससे स्त्रियों की संख्या में कमी आई। स्त्रियों और पुरूषों के अनुपात में विषमता के कारण बहुपति विवाह आरम्भ हो गया।
३. वहु पत्नी विवाह— इसके पश्चात् कृषि युग आया अत: स्त्री भ्रूण हत्या बन्द हो गई जिससे लड़कियों की संख्या बढ़ी जिससे वहु पत्नी विवाह का प्रचलन हुआ।
४. एक विवाही परिवार— सभ्यता के विकास के साथ न्याय की मांग बढ़ी आचार के नियम बनने लगे जिसके कारण एक विवाह प्रथा का विकसित स्वरूप सामने आया। मॉरंगन तथा

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

एन्जिल्स ने परिवार के पांच स्तरों का उल्लेख किया है जिसमें गुजर कर ही परिवार वर्तमान स्थिति तक पहुंच सके है।

(क) रक्त सम्बन्धी परिवार— यह प्रारम्भिक अवस्था है जिसमें समान रक्त वाले लोग आपस में विवाह करते थे, भाई बहिन में विवाह सम्पन्न होते थे।

(ख) समूह परिवार— परिवार के विकास की यह दूसरी अवस्था है जिसमें समान रक्त वालों में विवाह तो बन्द हो गये सब भाइयों के लिये सब बहनें पत्नी और सब बहनों के लिये सब भाई पति समझे जाते थे।

(ग) सिन्डेर्स्मियन परिवार— यह परिवार के विकास का तीसरा चरण है। इस स्तर पर समूह विवाह पर प्रतिबंधित लगने लगे। अब एक पुरूष एक स्त्री से विवाह करने लगा परन्तु परिवार में जितनी भी स्त्रियां होती थी उनमें से किसी से भी उसका यौन सम्बन्ध हो सकता था।

(घ) पितृ सत्तात्मक परिवार— परिवार पर पुरूष की पूरी प्रभुता थी वह अनेक स्त्रियों से विवाह कर सकता था।

एक विवाही परिवार— यह परिवार की अन्तिम और आधुनिक अवस्था है इसमें एक स्त्री एक पुरूष से तथा एक पुरूष एक स्त्री से विवाह कर सकता है।

आलोचना— उद्विकासीय सिद्धान्त व्यावहारिक दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता इसके आधार पर हम यह नहीं मान सकते कि एक विवाह आधुनिक समाज का एकमात्र स्वरूप है। प्राचीन युग में भी अनेक जनजातियों में एक विवाह प्रथा पाई जाती थी।

चक्राकार सिद्धान्त : इस सिद्धान्त के प्रतिपादक है ली—प्ले, सोरोकिन, स्पेंगलर तथा जिमरमैन। इस सिद्धान्त के अनुसार परिवार अपने स्वरूप में चक्र की भांति घूमता रहता है। प्रथम परिवार का लिंग साम्यवाद से हुआ सभ्यता व संस्कृति के साथ—साथ परिवार भी अपने स्वरूप को बदलता रहा विकास की चरम सीमा पर पहुंचकर फिर परिवार अपनी प्रारम्भिक स्थिति को ही प्राप्त होता है। इस प्रकार घड़ी के पैण्डुलम की भांति परिवार के विकास का क्रम चलता रहता है। परिवार की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इस सिद्धान्त की सत्यता को लगभग सभी विद्वानों ने माना है।

निष्कर्ष: परिवार में होने वाले विभिन्न परिवर्तनऔर उनके कारण

मेकाइवर एवं पेज के अनुसार परिवार के स्वरूप में भी परिवर्तन हो रहा है। पारिवारिक ढांचे में होने वाले परिवर्तनों में तीन परिवर्तन उल्लेखनीय है।एक तो यह परिवार में वैवाहिक समझौते का जो नियंत्रण रहता था। वह शिथिल होता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप तलाकों की संख्या बढ़ती जा रही है।दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन महिलाओं की आर्थिक भूमिका में हो रहा है। अब महिलायें केवल घरेलू गृहस्थी का ही कार्य नहीं करती। वे घरों के बाहर भी आय उपार्जन के

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कार्य करती है। इस प्रकार महिलाओं को पुरूष पर आर्थिक निर्भरता कम होती जा रही है व उसकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ती जा रही है। तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन पारिवारिक ढांचे में यह हो रहा है कि परिवार का जो धार्मिक आधार था वह समाप्त होता जा रहा है। परिवार पर धर्म का नियंत्रण शिथिल होता जाता रहा है। इसके अतिरिक्त सन्तानों की संख्या कम होने व दो सन्तानों की उत्पत्ति के मध्य समय की दूरी अधिक होने के कारण भी पारिवारिक ढांचे में परिवर्तन हुआ है। परिवार का आकार सिमटता जा रहा है। पति—पत्नी के सम्बन्धों में एक नया परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है।आधुनिक परिवारों का आकार छोटा हो रहा है। पितृ सत्तात्मक से परिवार मानव अधिकार वाले बनते जा रहे हैं। महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता में वृद्धि हो रही है। सन्तानों की संख्या कम परन्तु उनके पालन पोषण पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है।रक्त सम्बन्धों वाले परिवारों के स्थान पर वैवाहिक सम्बन्धों की प्रधानता वाले परिवारों की संख्या बढ़ती जा रही है। परिवार के कार्य कम होते जा रहे हैं। भारत में परिवार के परिवर्तित प्रतिमानों के सम्बनध में हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

(१) परिवारों में परिवार नियोजन अपनाने की प्रवृति में वृद्धि हो रही है।

(२) प्राथमिक परिवारों की प्रवृति में वृद्धि।

(३) अन्तर्जातीय एवं अन्त:धार्मिक विवाहों के विरोध में कमी।

(४) परिवार में अन्त: व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रजातन्त्रात्मकता की तरफ बढ़ रहे हैं।

(५) जीवन साथी के चुनाव के तरीके में परिवर्तन।

(६) शिक्षित परिवारों में पत्नियां घर के बाहर कार्य करके आय उपार्जन करती है। महिलाएं मुख्यत: डॉक्टर, नर्स, शिक्षक, क्लर्क, टेलीफोन आपरेटर, टाइपिस्ट, रिसिप्सनिस्ट, हवाई जहाज परिचारिका आदि के व्यवसायों में आने लगी है।

(७) धार्मिक गतिविधियों में कमी।

(८) महिलाओं की स्थिति सुधर रही है।

(९) एक विवाही प्रथा को अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

(१०) परिवार के परम्परागत कार्यों में विशाल परिवर्तन हो रहा है।

उपरोक्त सभी परिवर्तन मुख्य रूप से नगरीय परिवारों से अधिक सम्बन्धित हैं परिवारों में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों के कारण— हम अब पारिवारिक परिवर्तन के लिये उत्तरदायी सामान्य कारणों का वर्णन कर रहे हैं। पारिवारिक परिवर्तनों व पारिवारिक विघटन के कारणों में पर्याप्त समानता है। यहां हम इलियट एवं मैरिल द्वारा बताइये गये पारिवारिक परिवर्तनों के कारणों का वर्णन कर रहे हैं।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

१. सामाजिक कारण :

1. **सामाजिक मूल्यों में विभिन्नता** : परिवार के कुछ सदस्य प्राचीन रूढ़ियों एवं प्रथाओं पर जोर देते हों जबकि नई पीढ़ी के लोग उन्हें मानने से इंकार करते हों।
2. **सामाजिक ढांचे में परिवर्तन** : अभी तक पत्नी केवल पत्नी थी। परन्तु आधुनिक पति अपनी पत्नी में प्रेमिका का रूप भी देखना चाहता है। केवल गृहस्थिनी का नहीं परन्तु पत्नियां यदि प्रेमिका के रूप में पति को सन्तोष नहीं दे सके तो विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।
3. **सांस्कृतिक भिन्नता** : सांस्कृतिक भिन्नता से पति—पत्नी की आदतों व स्वभाव में अन्तर होगा। यह अन्तर उनकी रूचि एवं हितों में असमानता उत्पन्न कर देगा।
4. **विवाह के आधार में परिवर्तन** : विवाह माता—पिता द्वारा व्यवस्थित व आयोजित नहीं रहे धार्मिक संस्कार की भावना भी पुरानी पड़ गई। प्रेम विवाहों में वृद्धि हुई। प्रेम विवाह अधिकांशत: कुछ समय बाद असफल होते देखे गये हैं।
5. **पत्नी का घर से बाहर कार्य करना** : पत्नी पर दोहरा उत्तरदायित्व आज के युग ने लाद दिया है। एक तो उसे घरेलू कार्यों का उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है। दूसरे घर के बाहर यदि वह किसी कारखाने या कार्यालय में कार्य करती है तो वहां उसका उत्तरदायित्व उसे निभाना पड़ता है इससे वह अपने पति की यौन आदि इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाती।

२. आर्थिक कारण :

1. **महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता :** वर्तमान युग में महिलाएं पूर्णत: पुरूषों पर निर्भर नहीं रही। अत: परिवार में पुरूषों के अधीन रहकर जीवनयापन करना उन्हें अच्छा नहीं लगता।
2. **प्रतिकूल परिस्थितियाँ** : व्यापार में घाटा, नौकरी छूट जाना, दीर्घकालीन बीमारी, किसी दुर्घटना में अपंग हो जाना आदि परिस्थितियां पारिवारिक विघटन का कारण बन सकती हैं।
3. **व्यापार व्यवसाय में अत्यधिक व्यवस्तता** : व्यापार व्यवसाय में पति की अत्यधिक व्यवस्तता भी पारिवारिक असन्तोष का कारण बन जाती है। मानसिक रूप से पति उपेक्षा प्रवृत्ति से पत्नी असन्तुष्ट रहती है।
4. **निर्धनता एवं बेकारी** : गरीबी व बेकारी भी कभी—कभी पारिवारिक विघटन का कारण बन जाती है। गरीबी के कारण परिवार के सदस्यों में तनाव बना रहता है।
5. **औद्योगीकरण एवं नगरीयकरण** : औद्योगीकरण एवं नगरीयकरण ने महिलाओं को घर के बाहर कार्य करने का अवसर प्रदान कर दिया। महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो गई। इसके अतिरिक्त विवाह के बाहर के यौन सम्बन्धों को बढावा मिलता है जिससे पति एवं पत्नी के सम्बन्धों की मधुरता नष्ट हो जाती है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

३. **धर्म निरपेक्षता** :धर्म निरपेक्षता की भावना भी एक सीमा तक पारिवारिक विघटन के लिये उत्तरदायी हैं परिवार में जब सदस्यों के दृष्टिकोण बदल जाते हैं तो परिवार का विघटन हो जाता है। अब विवाह को पवित्र संस्कार मानने के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ है। अब विवाह के सामाजिक समझौते के रूप में समझा जाता है। ऐसे विवाहों में तलाक आदि की छूट रहती है।

४. **पश्चिमीकरण** :आज का मानव पश्चिमी सभ्यता को अपनाकर अपने आप पर गर्व महसूस कर रहा है लेकिन इसका अन्त देखकर हो रहा है। अपनी संस्कृति को छोड़कर पश्चिमी सभ्यता को ग्रहण कर रहा है। बडे बूढ़ों का मान सम्मान समाप्त होता जा रहा है।

तलिकायें

तालिका क्रमांक—१ आयु संरचना

२०—३० वर्ष		३०—४० वर्ष		४०—५० वर्ष		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
३२	३२	३२	३२	३६	३६	१००

तालिका क्रमांक—२ शैक्षणिक संरचना

विद्यालयीन		महाविद्यालयीन		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
४६	४६	५४	५४	१००

तालिका क्रमांक—३ निवास स्थान के आधार पर उत्तरदाताओं का विभाजन

ग्रामीण		नगरीय		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
४२	४२	५८	५८	१००

तालिका क्रमांक—४ परिवार का स्वरूप

एकांकी		संयुक्त		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
४४	४४	५६	५६	१००

तालिका क्रमांक—५ संयुक्त परिवारों का विघटन

सहमत		अर्द्धसहमत		असहमत		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
५६	५६	३८	३८	६	६	१००

तालिका क्रमांक—६ परिवार के मुखिया के प्रभाव में कमी

हाँ		नहीं		मालूम नहीं		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
८६	८६	८	८	६	६	१००

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तालिका क्रमांक—७ परिवार के विघटन का सबसे बड़ा कारण

औद्योगीकरण		नगरीयकरण		पश्चिमीकरण		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
२८	२८	३०	३०	४२	४२	१००

तालिका क्रमांक— ८ परिवार के विघटन का सबसे बड़ा कारण

औद्योगीकरण		नगरीयकरण		पश्चिमीकरण		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
२८	२८	३०	३०	४२	४२	१००

तालिका क्रमांक—९ स्त्रियों के शिक्षित होने से अर्न्तजातीय विवाह को प्रोत्साहन

हाँ		नहीं		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
९०	९०	१०	१०	१००

तालिका क्रमांक—१० परिवार में परिवर्तन अधिक आयु में विवाह के कारण

हाँ		नहीं		योग
संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
७८	७८	२२	२२	१००

संदर्भ

दुबे सरला — सामाजिक विघटन, विवेक प्रकाशक जवाहर नगर, दिल्ली—७, १९९७

गुप्ता एम.एल. एण्ड शर्मा डी.डी. — समाजशास्त्र वाल्यूम—।। साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा २००२

जैन बी.एम. — रिसर्च मैथ्डोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन्स नई दिल्ली जयपुर, १९९७

लवानिया एम.एन. एण्ड जैन शशी के — रिसर्च मैथ्डोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, जयपुर (१९८५)

जैन पुखराज — भारत और आधुनिक विश्व, साहित्य भवन आगरा १९९१

बेदालंकार — अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध राजपाल एण्ड संस दिल्ली

मुकर्जी आर.एन. — पारिवारिक समाजशास्त्र विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली

महाजन एवं महाजन — परिवार एवं समाज मेरठ प्रकाशन

सक्सेना आर.सी. — श्रम समस्यायें एवं समाज कल्याण

देशाई आई.पी. — द जाइंट फेमिली इन इण्डिया

यंग पी.वी. — साइंटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च

देव इन्द्र— भारतीय समाज

तोमर डॉ. रामबिहारी सिंह — समाजशास्त्र के मूल तत्व

यंग पी.वी. — सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोध १९७८

मुकर्जी रविन्द्रनाथ — सामाजिक समस्यायें

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies